SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

सतत विकासः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

रविन्द्र कुमार, भूगोल विभाग,
बख्शी का तालाब इंटर कॉलेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत
सुलेमान, शोधार्थी, भूगोल विभाग,
ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
रविन्द्र कुमार, भूगोल विभाग,
बख्शी का तालाब इंटर कॉलेज,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत
सुलेमान, शोधार्थी, भूगोल विभाग,
ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत
shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 05/10/2021
Revised on : -----
Accepted on : 12/10/2021
Plagiarism : 02% on 06/09/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Wednesday, October 06, 2021
Statistics: 91 words Plagiarized / 4523 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

lrr fodkl% ,d fo'ys"k.kkRed v/;;u lkjka'k& euq"; lH;rk ds fodkl ds vkjfEHkd dky ls gh viuh lq[k&lqfo/kk esa o`f) gsrq fujarj ç;Ru djrk jgk gS bl Øe es mlus vusd rduhdksa] lalk/kuks ,oa midj.kksa dh [kkst fd;k ftlds dkj.k

ekuo thou vis{kk-r vf/kd lqxe gksrk x;kA dkykarj es lalk/ku ,oa rduhdh fodkl dh blh çfØ;k dks fodkl dgk x;kA vkfFkZd fodkl dh ;g çfØ;k mUuhloh 'krkCnh rd fujarj pyrh jgh vkSj fuR;

शोध सार

मनुष्य सभ्यता के विकास के आरम्भिक काल से ही अपनी सुख–सुविधा में वृद्धि हेतु निरंतर प्रयत्न करता रहा है। इस क्रम मे उसने अनेक तकनीकों, संसाधनो एवं उपकरणों की खोज किया जिसके कारण मानव जीवन अपेक्षाकृत अधिक सुगम होता गया। कालांतर मे संसाधन एवं तकनीकी विकास की इसी प्रक्रिया को विकास कहा गया। आर्थिक विकास की यह प्रक्रिया उन्नीसवी शताब्दी तक निरंतर चलती रही और नित्य नये–नये कीर्तिमान भी बनाती रही। विद्वानों ने इस प्रक्रिया को आर्थिक विकास, आर्थिक संवृद्धि, मानव विकास आदि नामों से अभिहित किया। समय के साथ इसके नये–नये मॉडल सिद्धान्त एवं मापदण्ड बनते रहे। इस पर अनेक शोध, विचार गोष्ठियां एवं शैक्षिक परिचर्चा होती रही किन्तु बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध मे जब विश्व की जनसंख्या बहुत अधिक हो गयी और संसाधनो की कमी पड़ने लगी तथा दूसरी ओर औद्योगिक क्रान्ति के दुष्प्रभाव के परिणाम स्वरूप पर्यावरण प्रदूषण, ओजोन रिक्तिकरण, परिस्थितिकी असंतुलन आदि समस्याएँ अपना विकराल रूप दिखाने लगी तब विद्वानों का मन विकास के ऐसे रास्ते ढूँढने की ओर गया जो निरंतर चलता रहे और बिना पर्यावरण को क्षति पहुंचाए मानव विकास के पथ पर अग्रसर होता रहे। कालांतर मे विकास की एक आयी अवधारणा की खोज हुई जिसे सतत विकास (Sustainable Development) कहा गया है। इस नए विकास मॉडल मे बिना प्रकृति को क्षति पहुंचाए विकास को आगे बढ़ाने पर जोर दिया जाता है।

इस लेख को लिखने के पूर्व हमने अनेक शोध पत्रों, लेखो एवं पुस्तकों का अध्ययन किया और जानने का प्रयत्न किया कि विकास की प्रक्रिया का आरम्भ कैसे

हुआ? विकास किसे कहा जाता है? विकास के प्रतिरूप क्या है? विकास के संकेतक क्या है? काफी अध्ययन के बाद यह पता चला कि विकास कि प्रक्रिया अत्यन्त जटिल है इसके रूप निरंतर बदलते रहे है। इस लेख मे इन परिवर्तनों को विश्लेषित करने के साथ–साथ इसके नवीन रूपों को भी विश्लेषण किया गया है। अंत मे सतत विकास के मार्ग मे आने वाली चुनौतियों कि ओर ध्यान खीचते हुये अग्रिम शोधों हेतु दिशा भी दी गई है।

मुख्य शब्द

सतत विकास, आर्थिक विकास, मानव, पर्यावरण, औद्योगीकरण, संसाधन.

सतत विकास की अवधारणा

1960 के पूर्व तक विकास का अभिप्राय आर्थिक संवृद्धि या आर्थिक विकास ही माना जाता था किन्तु आर्थिक संवृद्धि एवं आर्थिक विकास शब्दावली पर अर्थशास्त्रियों मे मतभेद है। उनके अनुसार आर्थिक संवृद्धि सामान्यतया आर्थिक वृद्धि का द्योतक है जबकि आर्थिक विकास मानव कि आर्थिक संवृद्धि के साथ–साथ उसके सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक विकास को भी व्यक्त करता है। विकास की ये विभिन्न संकल्पनाएँ समय के साथ परिवर्तित होती रही हैं, आज कोई भी अर्थशास्त्री या भूगोलवेत्ता आर्थिक विकास या विकास की परिभाषा देता है तो कुछ समय बाद वह अपनी ही परिभाषा से असंतुष्ट दिखाई देता है। इसी संतुष्टि एवं असंतुष्टि के द्वैत से विकास की एक नई अवधारणा का विकास हुआ जिसे सतत विकास कहा जाता है। अँग्रेजी मे इसे Sustainable Development कहते है। (Tomislav Klarin, 2018)

ब्रैटलैंड आयोग ने सतत विकास को सर्वप्रथम परिभाषित करते हुए लिखा कि– "सतत विकास वह विकास है जो भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकता की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ियों की आवश्यकता को पूरा करता है। (Sustainable development is a development that means the needs of the present without compromising the ability of future generations to meet their own needs.)

वेंडर–मरवे और वाडर मरवे (1999) के अनुसार "सतत विकास एक ऐसा कार्यक्रम है जो आर्थिक विकास की प्रक्रिया को इस प्रकार परिवर्तित करता है कि महत्वपूर्ण परितंत्र को भावी पीढ़ियों हेतु संरक्षित रखते हुए वर्तमान की जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि करता है। (Sustainable development is a program that changes the economic development process to ensure the basic quality of life] protecting valuable ecosystem and other communities at the same time.)

दुरन एट अल, (2015) (Duran et al 2015) ने सतत विकास को निम्न प्रकार परिभाषित किया– "सतत विकास वह विकास है जो पर्यावरण को संरक्षित करता है क्योंकि एक सतत पर्यावरण ही सतत विकास दे सकता है। (Sustainable development is a development that protects the environment because a Sustainable environment enables Sustainable development.)

सतत विकास या Sustainable development का विचार आर्थिक विकास की वह अवधारणा हैं जिसमे वर्तमान समय की आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ–साथ भावी पीढ़ियों की आवश्यकता को भी ध्यान मे रखा जाता है और यह प्रयास किया जाता है कि जिन संसाधनों का उपयोग हम कर रहे हैं, हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी उन संसाधनों का उपयोग अच्छे से कर पाएँ ताकि उनका जीवन हमारे जीवन से बेहतर हो सके।

सतत विकास का इतिहास

भारतीय संस्कृति मे प्राचीन काल से ही सतत विकास की अवधारणा को दैनिक व्यवहार मे समाहित किया गया है इसी कारण प्रकृति के विविध रूपो को ईश्वर की तरह पूजा जाता है। गाँव के समीप स्थित ऊँचे टीले को संरक्षित करने हेतु उसे "ग्राम देवता" (डिह बाबा) के रूप मे देखा जाता है और उसकी पूजा की जाती है। इसी तरह अधिक मात्रा मे प्राण वायु आक्सीजन का उत्सर्जन करने वाले वृक्षो जैसे पीपल, बरगद, नीम, तुलसी, महुआ आदि

की पूजा की जाती है। जल को सुरक्षित एवं संरक्षित करना पुण्य कार्य माना जाता है, समृद्ध लोग प्राचीन काल से वावली (तालाब) एवं कुएं खुदवाकर आम लोगो का सहयोग करते रहे हैं। गरीबों को दान करना पवित्र धार्मिक कृत्य है इसमें अमीर लोग अपने धन का कुछ अंश गरीबों को दे देते है जिसमे उनका जीवन बेहतर होता हैं। सूर्य, चंद्रमा के साथ अन्य गृह नक्षत्रो की पूजा की जाती है उन्हे देवता समान माना जाता हैं। उपरोक्त सभी तत्वों का सार यह है कि संसाधन संरक्षण भारतीय संस्कृति का प्राण तत्व है। (Maurya S.D. and Maurya R.K., 2021)

वैश्विक स्तर पर सतत विकास की अवधारणा का सूत्रपात द्वितीय विश्व युद्ध (1945) के बाद हुआ जबकि विभिन्न देशो के मध्य तेजी से विकास करने की होड मच गई और एक दूसरे से आर्थिक विकास मे आगे निकलने की प्रतियोगिता शुरू हो गई। (Dan Cristian Durana, Alin Artene & Others, 2015) कालान्तर मे विकास की इसी अंधी दौड़ ने आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय विषमताओं को जनम दिया। एक ओर जहां प्राकृतिक संसाधनो के अन्धाधुन्ध दोहन के कारण विश्वभर मे इसकी कमी महसूस की जाने लगी वही दूसरी ओर तीव्र एवं अनियंत्रित औद्योगीकरण ने पर्यावरणीय जैवविविधता को नष्ट किया, वनो का विनाश किया, लोगों को विस्थापन हेतु मजबूर किया, छोटे एवं कुटीर उद्योगों के अस्तित्व पर संकट खड़ा कर दिया। इसी के साथ पर्यावरण प्रदूषण एवं परिस्थितिकी असंतुलन की समस्या भी विश्व स्तर पर उत्पन्न हो गई। ओजोन परत जो कि हम सबको सूर्य की पराबैंगनी किरणों से रक्षा करती है नष्ट होने लगी है। औद्योगिक क्रान्ति (1860) ने सामाजिक विषमता एवं आर्थिक विषमता की खाई को और बढ़ा दिया। समाज शोषक एवं शोषित समाज मे बट गया। गरीब और गरीब होने लगा जबकि अमीरों की एक अन्य श्रेणी अस्तित्व मे आयी जो येन केन प्रकारेण अपना हित साधन कर रातो रात अमीर बनने का प्रयत्न करती है। इसके लिए उसे जो भी अच्छा बुरा करना पड़े करती है। इसी पृष्ठिभूमि से सतत विकास की अवधारणा का जन्म हुआ। (Keeley B., 2015)

सतत विकास की अवधारणा का एतिहासिक संदर्भ

वर्ष	कार्य	विवरण
1969	संयुक्त राष्ट्र द्वारा Man and His Environment or Uthant Report का प्रकाशन	इस रिपोर्ट को लगभग 2000 वैज्ञानिकों ने तैयार किया था इसका उद्देश्य पर्यावरण अवनयन को रोकना था।
1972	संयुक्त राष्ट्र और UNEP का प्रथम मानव–पर्यावरण सम्मेलन स्टाकहोम, स्वीडन में हुआ।	Only One Earth के नारे के साथ पर्यावरण सरंक्षण हेतु घोषणा पत्र एवं कार्य योजना का प्रकाशन
1975	UNESCO का पर्यावरण शिक्षा पर सम्मेलन, वेलग्रेड, यूगोस्लाविया	विश्व पर्यावरण शिक्षा का ढाँचा तैयार किया गया जो वेलग्रेड चार्टर के नाम से प्रसिद्ध है।
1975	मानव–पर्यावरण का अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, क्योटो, जापान	1972 के स्टाकहोम सम्मेलन की प्रगति पर विचार–विमर्श।
1979	प्रथम जलवायु सम्मेलन जिनेवा, स्वीटजरलैण्ड	जलवायु परिवर्तन पर शोध एवं नियंत्रण की स्थायी व्यवस्था का निर्माण
1981	अल्पविकसित देशों का प्रथम संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन	अल्पविकसित देशों के मापदण्ड एवं सहायता हेतु एक रिपोर्ट का प्रकाशन
1984	संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण एवं विकास आयोग की स्थापना (WCED)	विश्व के विकसित एवं विकासशील देशों के मध्य सहायता एवं विश्व पर्यावरण संरक्षण की वैश्विक कार्य योजना तैयार करना
1987	WCED की रिपोर्ट Our Common Future अथवा ब्रांटलैण्ड रिपोर्ट का प्रकाशन	सतत विकास के मूल सिद्धांतो का प्रकाशन

1987	मल्टीपल प्रोटोकॉल का प्रकाशन	ओजोन परत पर होने वाले हानिकारक प्रभावों पर शोध एवं कार्य
1990	द्वितीय विश्व जलवायु सम्मेलन जिनेवा, स्वीटजरलेण्ड	जलवायु परिवर्तन पर शोध एवं नियंत्रण का वैश्विक नेटवर्क का निर्माण
1992	संयुक्त राष्ट्र का पर्यावरण एवं विश्व सम्मेलन, रियो सम्मेलन, ब्राजील	सतत विकास पर एजेंडा–21 की घोषणा एवं कार्य योजना पर निर्णय
1997	क्योटो जलवायु परिवर्तन सम्मेलन क्योटो, जापान	उपस्थित देशों ने क्योटो प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए जिसका उद्देश्य 2005 तक CO_2 एवं अन्य ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन मे कमी लाना था।
2000	संयुक्त राष्ट्र ने शताब्दी लक्ष्यों की घोषणा की	इस (MDGS) मे 8 सहताब्दी लक्ष्यों का निर्धारण किया जिन्हे 2015 तक पूरा करना था।
2002	सतत विकास पर विश्व समिति का आयोजन जोहान्सवर्ग, दक्षिण अफ्रीका	रियो सम्मेलन मे निर्धारित लक्ष्यों पर हुयी प्रगति की समीक्षा और भविष्य लक्ष्यों को समयावधि मे प्राप्त करने हेतु दिशा निर्देशों का निर्धारण
2009	तृतीय विश्व जलवायु सम्मेलन जिनेवा, स्वीटजरलैण्ड	भावी वैश्विक जलवायु परिवर्तनों की मानीटरिंग और निर्धारित समयावधि में पूर्ण करने पर सहमति
2012	संयुक्त राष्ट्रसंघ Rio20 सम्मेलन रियो द जनेरियों, ब्राजील	रियो सम्मेलन के 20 वर्ष पूर्ण होने पर The future we want रिपोर्ट का नवनीकरण और वैश्विक हरित ऊर्जा उत्पादन को प्रोत्साहन
2015	संयुक्त राष्ट्र सतत विकास सम्मेलन, न्यूयार्क, U.S.A.	संयुक्त राष्ट्र द्वारा सतत विकास संबंधी एजेण्डा 2030 का प्रकाशन, जिसमे 17 लक्ष्यों का 2030 तक प्राप्त करना है।
2015	संयुक्त राष्ट्र का जलवायु परिवर्तन सम्मेलन कोप–21 पेरिस, फ्रान्स	ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम एवं उनकी सीमा तय करने पर समझौता।

(Source: Tomislav Klarin, 2018)

सतत विकास की अवधारणा का सूत्रपात रिशेल कार्सन की पुस्तक ″द साइलेंट स्प्रिंग″ (1962) हुआ। इस पुस्तक मे डी.डी.टी. जैसे कीटनाशकों के प्रभाव से वन्य जीवो के ऊपर होने वाले प्रभावों की विस्तार से चर्चा की गयी है। इसके बाद 1968 मे जीव विज्ञानी पाल इर्लिच की पुस्तक ″पॉप्युलेशन बम″ का प्रकाशन हुआ। जिसमे जनसंख्या वृद्धि एवं प्राकृतिक संसाधनों के मध्य संघर्ष की चर्चा की गई है। 1969 ई० मे ″फ्रेंड्स ऑफ द अर्थ″ नामक एक N.G.O. (गैर–सरकारी संगठन) की स्थापना हुई जिसमे पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगो को सचेत करने का कार्य प्रारम्भ किया।

इस श्रृंखला मे ‘क्लव ऑफ रोम’ जो कि ‘मेसाच्युसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी’ के युवा वैज्ञानिकों का समूह ने 1972 मे एक रिपोर्ट का प्रकाशन किया जिसका शीर्षक था ‘लिमिट टू ग्रोथ’। इसमें जनसंख्या वृद्धि, पर्यावरण प्रदूषण तथा संसाधनों की सीमितता पर विस्तृत विवेचन किया गया था और यह चेतावनी भी दी गई की यदि इस अन्धाधुन्ध विकास पर लगाम नहीं लगाया गया तो मानव जाति को गंभीर परिणाम झेलने पड़ेंगें। (Dennis L. Meadows et al.)

संयुक्त राष्ट्र संघ परिसंवाद (UNCHE) का आयोजन (1972 ई. में) स्टॉकहोम में आयोजित किया गया था जिसमें वैश्विक पर्यावरण और विकास पर चर्चा हुई। इस पर आगे विचार विमर्श होता रहे इसके लिए "संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम" (UNEP) की स्थापना की गई। इस कार्यक्रम का परिणाम यह रहा कि विश्व स्तर पर पर्यावरणीय विकास या सतत विकास की अवधारणा का जन्म हुआ और विकास को निरंतर बनाए रखने हेतु पर्यावरणीय संरक्षण को आवश्यक माना गया। (IUCN & UNEP & WWF 1980)

1980 में (IUCN), अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधन संरक्षण संघ (UNEP) संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम तथा विश्व वन्य निधि (WWF) के द्वारा एक संयुक्त रिपोर्ट का प्रकाशन किया गया जिसका शीर्षक था World conservation strategy: living resources conservation for sustainable development इस रिपोर्ट में "Sustainable Development" शब्द पहली बार प्रयोग किया गया। इस रिपोर्ट में पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ आनुवंशिक विविधता की सुरक्षा तथा विकास की प्रक्रिया को निरंतर बनाए रखने के उपायों की ओर विश्व का ध्यान खींचा गया था। इस रिपोर्ट का प्रभाव यह रहा कि विश्व के अनेक राष्ट्रों द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर संसाधन संरक्षण संबंधी नीतियों का निर्माण किया गया। (IUCN & UNEP & WWF 1980)

1983 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा नार्वे की प्रधानमंत्री ग्रो हार्लेम ब्रांटलैंड की अध्यक्षता में एक आयोग "ब्रांटलैंड आयोग" का गठन किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण एवं विकास के संबंधों का पुर्नविश्लेषण करना था तथा सतत विकास हेतु उपाय सुझाना था। इस आयोग ने विश्व स्तर पर इस क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों, स्वैच्छिक संगठनों, संस्थाओं एवं विभिन्न देशों की सरकारों के मध्य समन्वय बनाया जो आगे चलकर रियो सम्मेलन का आधार बना। (Prajal Pradhan & Others, 2017)

3 जून से 14 जून 1992 में ब्राजील के शहर 'रियो दी जनेरियो' में मानव पर्यावरण संबंधों के बदलते आयाम पर परिचर्चा हेतु संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया जिसे रियो सम्मेलन या पृथ्वी सम्मेलन के नाम से जाना जाता है इसमें 178 देशों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। यह सम्मेलन अभी तक इस दिशा में हुए सभी सम्मेलनों से अधिक प्रभावी रहा। इस सम्मेलन में पारित निम्न प्रस्ताव का उपस्थित देशों ने समर्थन किया:

1. सतत विकास के विभिन्न मुद्दों पर विभिन्न देशों के मध्य समझौता।
2. सतत विकास के समझौतों के उद्देश्य को प्राप्त करने हेतु समझौता।
3. आम लोगों में सतत विकास के विषय में जागरूकता उत्पन्न करना।
4. सतत विकास एवं पर्यावरण संरक्षण के मुद्दों पर सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठनों के मध्य समन्वय
5. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एजेंडा में सतत विकास को सम्मिलित करना।

1997 ई मे संयुक्त राज्य अमेरिका के शहर न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र का एक विशेष सत्र आयोजित किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य था, रियो सम्मेलन में पारित विभिन्न मुद्दों पर कितनी प्रगति हुई का विश्लेषण करना तथा सतत विकास पर राष्ट्रों, संगठनों, स्थानीय समुदायों की प्रतिबद्धता को और मजबूत करना। पृथ्वी सम्मेलन में अवशेष रहे मुद्दों पर परिचर्चा इसका अन्य उद्देश्य था। (Prajal Pradhan & Others, 2017)

2002 में दक्षिणी अफ्रीकी शहर जोहांसवर्ग मे सतत विकास पर दूसरा बड़ा सम्मेलन आयोजित हुआ इसे रियो10 का नाम दिया गया। इस सम्मेलन में पर्यावरण और विकास से जुड़े प्रत्येक मुद्दे पर चर्चा हुई।

2009 ई में संयुक्त राष्ट्र संघ की साधारण सभा में रियो दी जनेरियो में रियो–20 सम्मेलन का आयोजन करने का निश्चय हुआ और जून 2012 में सतत विकास पर सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें पूर्व सम्मेलनों मे पारित प्रस्ताव की प्रगति की समीक्षा की गई तथा विश्व के समक्ष प्रस्तुत नवीन चुनौतियों पर चर्चा की गई। इस सम्मेलन में उपस्थित देशों ने सतत विकास की अवधारणा को साकार करने हेतु "हरित अर्थव्यवस्था" एवं निर्धनता उन्मूलन के प्रयासों को तीव्र करने पर बल दिया तथा सतत विकास हेतु संस्थागत ढांचा के निर्माण पर सहमति व्यक्त की। इसमें अधोलिखित 7 प्राथमिकता वाले क्षेत्र निश्चित किए गए:

1. उचित रोजगार
2. ऊर्जा
3. टिकाऊ शहर
4. खाद्य सुरक्षा
5. टिकाऊ खेती
6. पेय जल
7. समुद्र एवं आपदा तैयारी

सितंबर 2015 में संयुक्त राष्ट्र सतत विकास सम्मेलन पेरिस में आयोजित हुआ जिससे सम्मिलित सभी देशों (193) ने सतत विकास के 17 लक्ष्यों को 2030 तक पूरा करने के उद्देश्य से निर्धारित किया और यह तय किया गया कि 1 जनवरी 2016 से सभी देश इन लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु प्रयास शुरू करेंगे। (Prajal Pradhan & Others, 2017) इन प्रमुख 17 लक्ष्यों के साथ 169 सहायक लक्ष्य भी इस सम्मेलन में तय हुए। 17 लक्ष्यों का विवरण अधोलिखित है:

1. संपूर्ण विश्व से गरीबी के सभी रूपों को समाप्त करना।
2. भूख की समाप्ति, खाद्य सुरक्षा और बेहतर पोषण और टिकाऊ विकास को बढ़ावा।
3. सभी आयु के लोगों में स्वास्थ्य, सुरक्षा और स्वस्थ्य जीवन को बढ़ावा।
4. समावेशी एवं न्याय संगत गुणवत्ता युक्त शिक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही सभी को सीखने का अवसर देना।
5. लैंगिक समानता प्राप्त करने के साथ ही महिलाओं को सशक्त बनाना।
6. सभी के लिए स्वच्छता एवं पानी के सतत प्रबंध की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
7. सस्ती विश्वसनीय टिकाऊ और आधुनिक ऊर्जा तक पहुंच सुनिश्चित करना।
8. सभी के लिए निरंतर समावेशी और सतत आर्थिक विकास पूर्ण एवं उत्पादक रोजगार और बेहतर कार्य को बढ़ावा देना।
9. लचीले बुनियादी ढांचे, समावेशी और सतत औद्योगीकरण को बढ़ावा।
10. देशों के बीच एवं भीतर असमानता को कम करना।
11. सुरक्षित, लचीले एवं टिकाऊ शहर और मानव बस्तियों का निर्माण।
12. स्थानीय खपत और उत्पादन प्रतिरूप को सुनिश्चित करना।
13. जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्यवाही करना।
14. स्थाई सतत विकास के लिए महासागरों, समुद्र एवं समुद्री संसाधनों का संरक्षण और उपयोग।
15. सतत उपयोग को बढ़ावा देने वाले स्थानीय पारिस्थितिकी प्रणालियों, सुरक्षित जंगलों, भूमि क्षरण और जैव विविधता के बढ़ते नुकसान को रोकने का प्रयास करना।
16. सतत विकास के लिए शांतिपूर्ण एवं समावेशी समितियों को बढ़ावा देने के साथ ही सभी स्तरों पर उन्हें प्रभावी जवाबदेह बनाना ताकि सभी के लिए न्याय सुनिश्चित हो सके।
17. सतत विकास के लिए वैश्विक भागीदारी को पुनर्जीवित करने के अतिरिक्त कार्यान्वयन के साधनों को मजबूत बनाना।

वर्ष 2016 (5 से 8 अक्टूबर) में भारत की राजधानी नई दिल्ली में विश्व सतत विकास शिखर सम्मेलन के प्रथम संस्करण का आयोजन ऊर्जा एवं संसाधन संस्थान (TERI) द्वारा किया गया, जिसका मुख्य विषय था 2015 से परे: लोग, ग्रह और प्रगति (Beyond 2015: People, Planet and Progress.)

इस अवसर पर देश के राष्ट्रपति डॉ प्रणव मुखर्जी ने कहा कि भारत जलवायु परिवर्तन के साझा खतरे से न्याय संगत और बहुपक्षीय दृष्टिकोण से निपटने की दिशा में महत्वपूर्ण भागीदार है और भारत ने 2015 में हुए ऐतिहासिक जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौते की पुष्टि की है। सिक्किम के मुख्यमंत्री श्री पवन कुमार चामलिंग को प्रथम सतत विकास नेतृत्व पुरस्कार प्रदान किया गया। (Maurya S.D. and Maurya R.K. 2018)

वर्ष 2021 (10–12 फरवरी) में द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टिट्यूट (TERI) की ओर से बीसवें ''विश्व सतत विकास शिखर सम्मेलन'' का आयोजन ऑनलाइन मोड में किया गया जिसका विषय था "सबके लिए सुरक्षित और संरक्षित पर्यावरण और हमारा साझा भविष्य" इस सम्मेलन का उद्घाटन भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने किया। TERI द्वारा वर्ष 2000 से ही प्रतिवर्ष सतत विकास शिखर सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। TERI की स्थापना 1974 में हुई थी यह एक स्वतंत्र निकाय है। यह सतत विकास को विश्व स्तर पर साझा लक्ष्य बनाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष इस शिखर सम्मेलन का आयोजन करता है। (TERI, 2015) भारत ने इस सम्मेलन में विश्व के समक्ष साझा वैश्विक लक्ष्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया:

1. भारत अपने कार्बन उत्सर्जन को 2005 के स्तर से 2030 तक 33 से 35 प्रतिशत कम करेगा।
2. भूमि क्षरण तटस्थता के लिए भारत की प्रतिबद्ध है और वर्ष 2030 तक 450 गीगावाट अक्षय ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य प्राप्त करने की ओर अग्रसर है।
3. एक अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन बनाने का प्रस्ताव रखा।

सतत विकास के संकेतक

1992 में रियो द जनेरियो शहर में आयोजित पृथ्वी सम्मेलन में विश्व समुदाय के मध्य अनेक प्रस्ताव पर सहमति बनी थी उनमें एजेंडा–21 एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव था। यह लगभग 300 पृष्ठों का एक दस्तावेज है। इसमें वैश्विक स्वच्छता एवं पर्यावरण अनुकूल विकास (सतत विकास) की रणनीतियों का विवरण है। इसमें मुख्य शीर्षको के साथ 44 उपशीर्षक एवं 50 मुख्य संकेतक का विवरण है। यद्यपि प्रारंभ ने इसमें केवल 9 शीर्षक एवं 44 मुख्य संकेतक ही थे जिसमें 1995, 2001 एवं 2006 में संशोधन किया गया। यह सतत विकास आयोग द्वारा प्रस्तुत नवीन संकेतक है:

सतत विकास के संकेतक

शीर्षक	उपशीर्षक	मुख्य संकेतक	अन्य संकेतक
निर्धनता	आय निर्धनता	राष्ट्रीय निर्धनता रेखा से नीचे रहने वाली जनसंख्या का अनुपात	एक डॉलर प्रतिदिन से नीचे रहने वाली जनसंख्या का अनुपात
	आय असमानता	ऊपर से नीचे क्रम में राष्ट्रीय आय में हिस्से का अनुपात	
	स्वच्छता	उन्नत स्वच्छता सुविधाओं का उपयोग करने वाली जनसंख्या का अनुपात	
	पेयजल	उन्नत जल स्रोतों का उपयोग करने वाली जनसंख्या का अनुपात	
	ऊर्जा पहुँच	बिजली व अन्य आधुनिक ऊर्जा स्रोतों से रहित घरों का अनुपात जनसंख्या का अनुपात	खाना बनाने के लिए ठोस ऊर्जा स्रोतों का प्रयोग करने वाली
	जीवन स्थितियाँ	झोंपड़–पट्टी में रहने वाली शहरी आबादी का अनुपात	

प्रशासन	भ्रष्टाचार	रिश्वत देने वाली आबादी का अनुपात	
	अपराध	एक लाख लोगों पर अंतराष्ट्रीय मानव हत्या की संख्या	
		0–5 वर्ष की आयु तक मृत्युदर	
		जन्म के समय जीवन प्रत्याशा	जन्म के समय स्वस्थ्य जीवन प्रत्याशा
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य देखभाल सेवाएँ	प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच वाली आबादी का अनुपात	गर्भनिरोग प्रचलन दर
		बचपन की संक्रामक बीमारियों संबंधी टीकाकरण	
	पोषण स्तर	बच्चे–बच्चियों का पोषण स्तर	
	स्वास्थ्य स्थिति एवं जोखिम	एचआईवी–एड्स, मलेरिया, टीबी जैसी प्रमुख बीमारियों में अस्वस्थता दर	तंबाकू का प्रचलन आत्महत्या दर
शिक्षा	शिक्षा स्तर	प्राथमिक शिक्षा की अंतिम कक्षा तक सकल प्रवेश अनुपात	जीवन पर्यात शिक्षा
		प्राथमिक शिक्षा में वास्तविक नामांकन दर	
		माध्यमिक विद्यालय उपलब्धि दर	
	साक्षारता	वयस्क साक्षारता दर	
जन–संख्याकी	जनसंख्या	जनसंख्या वृद्धि दर	कुल गर्भधारण दर
		निर्भरता अनुपात	
	पर्यटन		प्रमुख पर्यटन क्षेत्रों एवं स्थलों पर स्थानीय समुदाय व पर्यटकों का अनुपात
प्राकृतिक संकट	प्राकृतिक संकट की पहचान	संकटग्रस्त क्षेत्रों मे निवास करने वाली आबादी का अनुपात	
	आपदा तैयारी एवं प्रतिक्रिया		प्राकृतिक आपदाओं से मानवीय एवं आर्थिक नुकसान
वातावरण	जलवायु परिवर्तन	कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन	ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन
	ओजोन परत क्षय	ओजोन परत क्षय बढ़ाने वाली वस्तुओं का उपयोग	
	वायु गुणवत्ता	शहरी क्षेत्रों मे वायु प्रदूषण संकेन्द्रण	
भूमि	भूमि उपयोग एवं स्थिति		भूमि उपयोग परिवर्तन
			भूमि क्षरण
	मरुस्थलीकरण		मरुस्थलीकरण से प्रभावित भूमि
	कृषि	कृषिगत एवं स्थायी कृषिगत क्षेत्र	उर्वरक प्रयोग कुशलता
			कृषि कीटनाशकों का प्रयोग
			जैविक खेती अधीन क्षेत्र
	वन	वन आच्छादित भूमि का प्रतिशत	निष्पत्रण से वनवृक्षों के विनाश का अनुपात
			टिकाऊ वन प्रबंधन के अंतर्गत वन क्षेत्र

महासागर, समुद्र एवं तट	तटीय क्षेत्र	तटीय क्षेत्रों में रहने वाली जनसंख्या का अनुपात	स्नान हेतु जल की गुणवत्ता
	मत्स्य क्षेत्र	सुरक्षित जैविकीय सीमा अंतर्गत मत्स्य भंडारण का अनुपात	
	समुद्री पर्यावरण	सुरक्षित समुद्री क्षेत्र का अनुपात	समुद्री उष्णकटिबंधीय सूचकांक (मरीन ट्रोपिक इंडेक्स)
			मूंग की चट्टानों का क्षेत्र, पारिस्थितिकीय तंत्र एवं इनके अंतर्गत आने वाले जीवन का प्रतिशत
स्वच्छ जल	जल मात्रा	सकल जलस्त्रोत उपयोग का अनुपात	
		आर्थिक गतिविधियों द्वारा जल उपयोग गहनता	
	जल गुणवत्ता	स्वच्छ जल में प्रदूषण	जल में जीव रसायन ऑक्सीजन की मांग प्रयुक्त जल का निस्तारण
जैववि विधता	परिस्थितिकीय तंत्र	सुरक्षित भूमध्यरेखीय क्षेत्र का अनुपात	सुरक्षित क्षेत्रों की प्रबंधकीय प्रभाविता
			चयनित प्रमुख पारिस्थितिकीय तंत्र का क्षेत्र आवास का नष्ट होना
	प्रजाति	प्रजातियों के खतरे की स्थिति में परिवर्तन	चयनित प्रमुख प्रजातियां
			आक्रामक बाहरी प्रजातियों का अनुपात
आर्थिक विकास	समष्टि अर्थशास्त्रीय प्रदर्शन	सकल घरेलू उत्पादन एवं प्रति व्यक्ति आय	सकल बचत
		सकल घरेलू उत्पादन में निवेश का हिस्सा	सकल राष्ट्रीय आय में समायोजित शुद्ध बचत का प्रतिशत
			महंगाई दर
	टिकाऊ सार्वजनिक वित्त	राष्ट्रीय आय में ऋण अनुपात	
	रोजगार	रोजगार जनसंख्या अनुपात	रोजगार उपलब्धता
		श्रम उत्पादकता एवं इकाई श्रम लागत	
		गैर–कृषिगत क्षेत्र में मजदूरी रोजगार में स्त्रियों का हिस्सा	
	सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकें	प्रति 100 लोगों पर इंटरनेट प्रयोगकर्ता	प्रति 100 लोगों पर टेलीफोन सुविधा
			प्रति 100 लोगों पर मोबाईल उपभोक्ता
	शोध एवं विकास		शोध एवं विकास पर सकल घरेलू व्यय (सकल घरेलू उत्पाद का प्रतिशत)
	पर्यटन	सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन का योगदान	

वैश्विक आर्थिक साझेदारी	व्यापार	सकल घरेलू उत्पाद में प्रतिशत के रूप में चालू खाता घाटा	विकासशील एवं अल्पविकसित देशों से आयातों का अनुपात
			विकासशील एवं अल्पविकसित देशों से निर्यात पर लगाया जाने वाला औसत कर
	बाहरी वित्त	सकल राष्ट्रीय आय के अनुपात के रूप में देय या प्राप्त शुद्ध सरकारी विकास सहायता	प्रत्यक्ष विदेशी निवेश ,शुद्ध आवक एवं शुद्ध जातक(सकल घरेलू उत्पादक का प्रतिशत)
			सकल घरेलू आय के प्रतिशत के रूप में प्रेषित रकम
उपभोग एवं उत्पादन तरीका	भौतिक उपभोग	अर्थव्यवस्था की भौतिक गहनता	घरेलू भौतिक उपभोग
	ऊर्जा उपभोग	सकल एवं प्रमुख उपयोगकर्ता श्रेणी के अनुसार वार्षिक ऊर्जा उपभोग	सकल ऊर्जा उपभोग में पुर्नवीकरण ऊर्जा स्त्रोतों का प्रयोग
		सकल एवं आर्थिक उपयोग की गहनता	
	अपशिष्ट उत्पाद एवं प्रबंधन	खतरनाक कचरे की उत्पत्ति	कचरे की उत्पत्ति
		कचरा निस्तारण एवं निपटान	रेडियोधर्मी कचरे का प्रबंधन
	परिवहन	यात्री परिवहन का भाग	मालभाड़ा परिवहन का भाग
			परिवहन की ऊर्जा गहनता

(Source: United Nations New York, 2007)

सतत विकास का मॉडल

सतत विकास के लक्ष्य को पाने के लिए वर्तमान समय मे जी रहे समाज को इस प्रकार का आचरण करना चाहिए जिससे वर्तमान समय मे उपलब्ध संसाधनों का सम्पूर्ण विनाश न हो। इसके लिए हमे एक साथ दो रणनीतियों पर कार्य करना होगा पहला, हम संसाधनो का न्यायोचित विदोहन करे अर्थात् अपनी प्रकृति को बिना क्षति पहुचाएँ हम सब उनका उपयोग करें और यह तभी संभव है जब हम एक वृक्ष कांटे, तब कम से कम दो वृक्ष और लगाएँ जिसमे से एक वृक्ष हमारे द्वारा काटे गए पेड़ की भरपाई होगी और दूसरे वृक्ष से भावी पीढ़ियों के लिए संसाधन का प्रबंध होगा। दूसरी रणनीति यह होगी कि संसाधनो का हम अनुकूलतम उपयोग करें इसका तात्पर्य यह है कि जिस संसाधन का हम प्रकृति से दोहन करे उसके प्रत्येक भाग का हम अच्छे से उपयोग करें। उदाहरण के लिए जब हम फर्नीचर हेतु पेड़ काटते है तो उसके मुख्य तने की अच्छी लकड़ी का उपयोग करते है जबकि शेष भाग फेंक देते है जबकि हम उसकी शाखाओं, पत्तियों एवं छालों का उपयोग कर सकते हैं, उससे हम अपनी कई जीवनोपयोगी वस्तुएं बना सकते है और जब हम ऐसा करेंगे तब हम संसाधन का न्यायपूर्ण विदोहन एवं अनुकूलतम उपयोग करेंगे। वास्तव मे यही सतत विकास का बुनियादी सिद्धांत है जो वर्तमान समय की आवश्यकता है क्योंकि विश्व की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है जबकि संसाधन वहीं है या घट रहे हैं। अतः सतत विकास का विचार ही विश्व की आर्थिक प्रगति को जारी रख सकता है। जिससे वर्तमान समाज के साथ–साथ भावी समाज भी खुशहाल रहेगा। (Maurya S.D. and Maurya R.K., 2021)

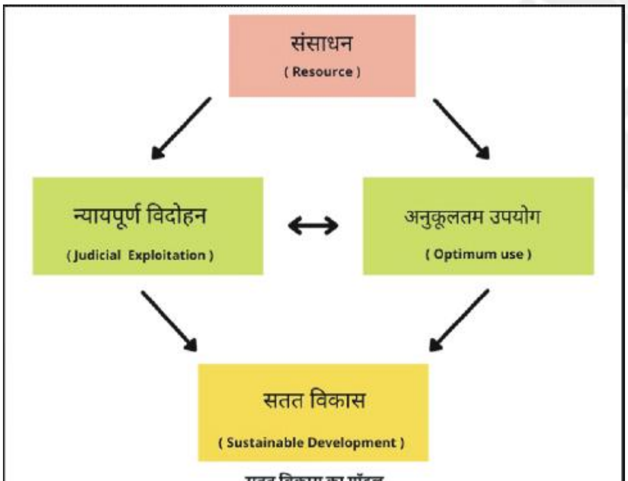

सतत विकास का मॉडल

शोध की दिशा

सतत विकास के संदर्भ में वर्तमान में अनेक शोध लेख, प्रबंध ग्रंथ एवं पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है या हो रहा है यह हमारे लिए आशा की किरण है। परंतु आज भी अनेक शोधों एवं पुस्तकों में सतत विकास का केवल अर्थ ही स्पष्ट किया जाता है उसके वास्तविक स्वरूप, उद्देश्य, प्रारूप एवं रणनीतियों पर विद्वानों में मतभेद है। कुछ लोग वर्तमान में उपलब्ध संसाधनों को भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने को ही सतत विकास कहते हैं जबकि कुछ विद्वान सतत विकास का अर्थ वर्तमान समय में अपनी आवश्यकता को सीमित करने एवं भौतिक विकास को छोड़ देने को कहते हैं, जबकि कुछ विद्वान सतत विकास की अवधारणा को अंतरराष्ट्रीय राजनीति का एक साधन मानते हैं। उनके द्वारा यह कहा जाता है कि विश्व के विकसित देशों द्वारा विकासशील एवं गरीब देशों पर जबरन थोपा जाने वाला यह एक महत्वपूर्ण एजेंडा है क्योंकि वर्तमान समय में जो पर्यावरण अवनयन हुआ है वह अधिकांशतया विकसित देशों में तीव्र औद्योगीकरण एवं नगरीकरण का परिणाम है। वह अपने द्वारा उत्पन्न पर्यावरणीय प्रभावों को विकासशील देशों एवं अविकसित देशों द्वारा मिलकर दूर कर रहे हैं और वह यह भी चाहते हैं कि कोई अन्य विकासशील राष्ट्र उतनी तेजी से विकास ना करें जितना तेजी से उन्होंने किया है। इस तरह के अनेक विमर्श सतत विकास के संदर्भ में हुए हैं। लेकिन यदि वास्तविक धरातल पर देखा जाए तो निश्चय ही सतत विकास आज प्रत्येक राष्ट्र की आवश्यकता है क्योंकि विकास की जो अंधी दौड़ चल रही है उसका कोई अंत नहीं है और इस दौड़ के कारण वर्तमान के साथ–साथ भविष्य की पीढ़ियों का भी भविष्य खतरे में है। आज विकास की इस दौड़ के कारण अनेक जीवो एवं पेड़ पौधों की प्रजातियां लुप्त हो गई हैं या लुप्त होने के कगार पर है। क्या हम अपने बच्चों को इसी तरह का पर्यावरण देंगे जिसमें अनेक जीव एवं पेड़–पौधे समाप्त हो जाएंगे, जिनके बारे में वह केवल पुस्तकों में ही पढ़ेंगे। क्या हम उन्हें ऐसे वातावरण देंगे जिनमें सांस लेना भी मुश्किल होगा। क्या हम उन्हें ऐसे फलों सब्जियों एवं खाद्य सामग्री को देंगे जिन में कीटनाशक दवाएं होगी जो उनके शरीर में अनेक रोगों को जन्म देंगी या उनके बच्चे अपंगता की स्थिति में जन्म लेंगे। क्या विश्व भर में संसाधनों के लिए संघर्ष हो ऐसा विश्व उनके लिए छोड़ना चाहते हैं? प्रश्न अत्यंत जटिल है किंतु विचारणीय है।

निष्कर्ष

सतत विकास वर्तमान समय का एक महत्वपूर्ण वैश्विक एजेंडा है। संपूर्ण विश्व आज विकास के ऐसे रास्ते की खोज में लगा है जिससे पर्यावरण को संतुलित रखते हुए विकास पथ पर आगे बढ़ा जा सके अन्यथा संपूर्ण विश्व को भौतिक प्रगति के कुपरिणाम परिणाम झेलने पड़ेंगे। इस लेख में सतत विकास की अवधारणा को सरल रूप में समझाने के साथ ही साथ इसके विभिन्न मानकों (संकेतको) पर भी प्रकाश डाला गया है, साथ ही इसके इतिहास को भी संक्षिप्त रूप में बताया गया है। भारत में सतत विकास की आवश्यकता क्यों है? इसे आंकड़ों के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। भारत जो कि विश्व की 1/6 जनसंख्या को धारण करता है जबकि इसका क्षेत्रफल विश्व का केवल 2.4 प्रतिशत ही है के लिए सतत विकास का मार्ग ही श्रेयस्कर है।

संदर्भ सूची

1. Tomislav Klarin (2018), The Concept of Sustainable Development: From its Beginning to the Contemporary Issues, Zagreb International Review of Economics & Business, Vol. 21, No. 1, pp. 67-94,2018,file:///C:/Users/hp/Downloads/Sustainable_Developmen/The_Concept_of_Sustainable_Development_From_its_Be.pdf
2. Dan Cristian Durana , Alin Artene & Others (2015), The objectives of sustainable development - ways to achieve welfare, Peer-review under responsibility of Academic World Research and EducationCenter, doi:10.1016/S2212-5671(15)00852-7, https://core.ac.uk/download/pdf/81993639.pdf
3. Keeley, B. (2015), Income Inequality: The Gap between Rich and Poor, OECD Insights, OECD Publishing, Paris. http://dx.doi.org/10.1787/9789264246010-en

4. Dennis L. Meadows et al. THE LIMITS TO GROWTH Universe Books, New York, 19, http://www.donellameadows.org/wp-content/userfiles/Limits-to-Growth-digital-scan-version.pdf
5. IUCN-UNEP-WWF (1980), WORLD CONSERVATION STRATEGY, https://portals.iucn.org/library/efiles/documents/wcs-004.pdf
6. Prajal Pradhan & Others (2017), A Systematic Study of Sustainable Development Goal (SDG) Interactions, https://doi.org/10.1002/2017EF000632
7. TERI (2015), *People, Planet and Progress Beyond*, ISBN:9788179935927, http://bookstore.teri.res.in/books/9788179935927
8. United Nations New York, (2007), *Indicators of Sustainable Development: Guidelines and Methodologies*, United Nations publication Sales No. E.08.II.A.2 ISBN 978-92-1-104577-2, https://sustainabledevelopment.un.org/content/documents/guidelines.pdf
9. Maurya S.D. and Maurya R.K. (2018), *Physical Geography & Physical environment of India*, Abhigyan Internation Lucknow, ISBN: 978-81-951948-3-4
10. Maurya S.D. and Maurya R.K. (2018), *Human Geography*, People & Economy, Abhigyan Internation Lucknow, ISBN: 978-81-951948-8-9
11. Sustainable Development, https://en.wikipedia.org/wiki/Sustainable_development

****